नई शिक्षा नीति-2020 में ऑनलाइन शिक्षा तथा भारत में चुनौतियाँ

शोधार्थी
निर्भय कुमार योगी
राज ऋषि भर्तृहरि मत्स्य विश्वविद्यालय अलवर
Email : drnky99@gmail.com

शोध निर्देशिका
डॉ. अनुराधा पालीवाल
(असिस्टेंट प्रोफेसर)
आर्य महिला शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय अलवर

सारांश:

शिक्षा हमारे जीवन की आधारशिला है। इसके बिना कोई भी व्यक्ति अपने जीवन में सफलता प्राप्त नहीं कर सकता। शिक्षा के माध्यम से ही सभ्य समाज का निर्माण संभव है। एक शिक्षित व्यक्ति ही सुसमृद्ध एवं संस्कारित भारत का निर्माण करता है और शिक्षित समाज शिक्षित देश को बनाने में अपनी अहम भूमिका का निर्वाह कर सकता है।

कोविड-19 महामारी ने दुनिया भर में शिक्षा और शैक्षिक प्रणालियों को अत्यधिक प्रभावित किया है कोरोना के संकट ने हमारी पूरी शिक्षा व्यवस्था के सामने कई सवाल खडे किए हैं जिनमें कक्षा कक्ष शिक्षण की प्रासंगिकता उसकी रोचकता और जरूरतों को बनाए रखना एक बडी चुनौती है।

आज के बदलते परिवेश में समय की मांग एवं आवश्यकतानुसार तकनीकी में बहुत से परिवर्तन किये जा रहे हैं। जिसने मानव जीवन के हर पक्ष को प्रभावित किया है। इसी कडी में शिक्षा ने एक नया आयाम प्राप्त कर लिया है जिसे ई-शिक्षा अथवा ऑनलाइन शिक्षा के नाम से जाना जाता है।

समाज ने ऑनलाइन शिक्षा की वास्तविकता को स्वीकार किया है यह शिक्षा प्राप्त करने का ऐसा आधुनिक माध्यम है जिसके उपयोग से शिक्षक विद्यार्थी देश-विदेश में रहते हुए भी सम्पर्क में रह सकते हैं।

शिक्षा एक ऐसा विषय है जिसमें रातों-रात परिवर्तन होना मुश्किल है प्रबल इच्छाशक्ति हो तो बदलाव की राह पर चलना बहुत कठिन भी नहीं होता इसके लिए नई शिक्षा नीति 2020 में देश की शिक्षा में कई परिवर्तनों की आधारशिला रखी गई है। उम्मीद की जाती है कि बदलाव कि यह बयार आने वाले दिनों में भारत में उस सोच को विकसित करेगी जिसकी कल्पना नई शिक्षा नीति में की गई है। नई शिक्षा नीति में ऑनलाइन शिक्षा और डिजिटल शिक्षा जैसे नए आयामों को समावेशित कर उसकी जरूरत एवं प्रासंगिकता को स्पष्ट किया है। प्रस्तुत शोध पत्र में ऑनलाइन शिक्षा के लिए पायलट अध्ययन, डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर, वर्चुअल लैब्स, ऑनलाइन शिक्षण मंच और उपकरण, शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण एवं प्रोत्साहन हेतु कार्यक्रम, ऑन लाइन मूल्यांकन और परीक्षाएं, डिजिटल अंतर को कम करने सबंधी सामग्री का निर्माण, डिजिटल डिपॉजिटरी और उसके प्रकार, ऑनलाइन

शिक्षा के समक्ष चुनौतियां एवं भारत में ई-शिक्षा की सफलता-असफलता जैसे प्रमुख उद्देश्यों को अनावृत किया गया है।

Key Word : शिक्षा, ऑनलाइन शिक्षा, डिजिटल शिक्षा, नई शिक्षा नीति, डिजिटल डिपॉजिटरी, वर्चुअल लैब्स

प्रस्तावना :-

शिक्षा प्राप्त करना जीवन का महत्वपूर्ण कार्य है। जो मुनष्य को बौद्धिक रूप से तैयार करती है, जिसे हम विभिन्न माध्यमों के द्वारा प्राप्त करते हैं। हमारी शिक्षण पद्धति में ''संवाद'' की प्रमुख भूमिका रहती है जिससे बालकों के भावनात्मक पहलू और तार्किक क्षमता का स्वाभाविक विकास होता है।

भारत देश गांवों का देश कहलाता है। जहां पर आबादी का एक बड़ा भाग निवास करता है। हमारी भौगोलिक स्थितियां एक जैसी नहीं है, वे विविधताओं से भरी हुई हैं। जो शिक्षा प्राप्त करने या देने में और ऐसी अनेक कठिनाइयां आज हमारे सामने है जो एक चुनौती बनकर मार्ग को अवरूद्ध कर रही है।

कोविड-19 वैश्विक महामारी ने पूरे विश्व की आर्थिक और सामाजिक पहलुओं के साथ-साथ हमारी शिक्षा व्यवस्था और पठन-पाठन कार्य सबसे ज्यादा प्रभावित किया है।

शैक्षणिक दृष्टि से वर्तमान हालात से उत्पन्न प्रभाव और उपस्थित विकल्पों की सीमाओं और संभावनाओं को जन्म दिया ऐसे में ऑनलाईन शिक्षण व्यवस्था एक वैकल्पिक माध्यम के रूप में उभर कर सामने आई, जो शिक्षा से वंचित बालकों को डिजिटल माध्यमों से घर बैठे-बैठे अर्जित करने की प्रक्रिया को आगे बढ़ाने का कार्य करने में अहम भूमिका निभा रहे हैं।

आज ऑनलाईन शिक्षा एक वास्तविकता है जिसे हमें स्वीकार करना पड़ेगा। ऑनलाईन शिक्षा प्रणाली एक वरदान की तरह है जिसमें कक्षा-कक्ष शिक्षण की प्रांसगिकता, उसकी रोचकता और उसकी जरूरत को बनायें रखना एक बड़ी चुनौती है।

ऑनलाईन (आभासी विधि) स्वप्न की तरह है जो कभी सच भी तो कभी झूठ भी, दोनों पहलुओं में चल सकता है, मगर वर्तमान की स्थिति में भावनात्मक जुड़ाव बेहद जरूरी होता है।

जब भी हम बालकों के सीखने-सीखाने की प्रक्रियाओं की बात करते हैं तो सर्वप्रथम कक्षा-कक्ष में होने वाली अन्त: क्रियाओं के साथ-साथ दैनिक गतिविधियों की अहम भूमिका होती है, क्योंकि बालक का सर्वांगीण विकास का क्रम इसी मंच के माध्यम से होता है। तकनीकी रूप से सक्षम बनने के लिए ऑनलाईन शिक्षा एक अवसर भी है और चुनौती भी।

कक्षा-कक्ष शिक्षा का विलोप भारत जैसे देश में संभव नहीं है। जरूरत इस बात की है कि शिक्षा का ऐसा एक समन्वयकारी और समावेशी ढांचा व प्रारूप बनाया जाऐ जिसमें डिजिटल शिक्षा, पारंपरिक शिक्षा पद्धति का

मखौल न उड़ायें और न पारंपरिक शिक्षा डिजिटल लर्निंग के नवाचार को बाधित करने की कोशिश करे।

ऑनलाईन शिक्षण व्यवस्था वैकल्पिक माध्यम ही होनी चाहिए, क्योंकि इससे बालकों में अकेलापन, अलगाव और हताशा का डर पैदा होने की संभावना को भी नजर अंदाज नहीं किया जा सकता। ऑनलाईन शिक्षण में कक्षाओं के संचालन को आसान और सर्वसुलभ तरीकों के द्वारा विकसित करने की बहुत बड़ी चुनौती आज हमारे सामने है।

ऑनलाईन शिक्षा के सफल संचालन हेतु प्रमुख रूप से दो प्रकार की चुनौतियां हमारे सामने आती है:-

(1) संसाधनों की चुनौतियां

(2) तकनीकी रूप से चुनौतियां

ऑनलाईन शिक्षा के सफल संचालन हेतु संसाधनों की चुनौतियां -

शिक्षा एक ऐसा विषय है जिसमें रातों रात परिवर्तन करना या होना मुश्किल है। कोरोना के संकट ने इंसानी जीवन के हर पल को प्रभावित किया है। किसी पक्ष को कम तो किसी पक्ष में अधिक प्रभावित किया है। शिक्षा जगत भी एक ऐसा क्षेत्र है जहां कोविड-19 का व्यापक असर देखने को मिला है। महामारी के बढ़ते प्रभाव को रोकनें के लिए देश में सम्पूर्ण लॉकडाउन लगाया गया जिसके कारण स्कूल, महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय की शिक्षा प्रतिकूल रूप से प्रभावित हुई। जिसके परिणाम स्वरूप शिक्षा आज तेजी से ई-शिक्षा की ओर अग्रसर हो रही है।

ई-शिक्षा में वेब आधारित लर्निंग, कम्प्यूटर, मोबाइल आधारित लर्निंग व वर्चुअल क्लासरूम आदि शामिल है। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के हिसाब से देश की शिक्षा में कई परिवर्तनों की आधारशिला रखी गई है। यह एक दस्तावेज मात्र नहीं है अपितु शिक्षा के माध्यम से राष्ट्र के पुर्ननिर्माण के लिए सरकार की प्रतिबद्धता

का परिचायक है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति में सीखने के बहु–आयामी दृष्टिकोणों को बढ़ावा दिया गया है, इसमें औपचारिक, ऑनलाईन तथा दूरस्थ अथवा वर्चुअल माध्यम के द्वारा बहुविषयक, व्यावसायिक एवं कौशल विकास को पोषित करने वाले पाठ्यक्रमों के निर्माण की बात कही गई है।

आज से कई वर्ष पहले जब ई–शिक्षा की अवधारणा आई थी तो दुनिया इसके प्रति उतनी सहज नहीं थी। समय और विकट परिस्थितियों में ई–शिक्षा ने सम्पूर्ण शैक्षिक व्यवस्था में अपना स्थान बना लिया, परन्तु ई–शिक्षा के रास्ते में अनेक चुनौतियां अवरोध पैदा कर रही है वे प्रमुख रूप से इस प्रकार हैं:–

(i) उचित अध्ययन स्थानों का अभाव:–

हमारा देश गांवों का देश कहा जाता है। जनगणना–2011 के अनुसार 74% ग्रामीण और 64% शहरी क्षेत्रों में तीन या उससे अधिक सदस्यों वाले 71% घरों में दो कमरे या उससे भी कम आवासीय स्थान हैं। ऐसी स्थिति में बालकों को पढ़ने के लिए अलग से स्थान उपलब्ध कराना एक कठिन कार्य साबित हो रहा है। ऐसी स्थिति में ऑनलाईन शिक्षा उन बालकों के लिए एक चुनौती से कम नहीं हैं।

(ii) इंटरनेट की धीमी गति एवं अपर्याप्त पहुंच:–

इंटरनेट की पर्याप्त गति के अभाव में ऑनलाईन शिक्षा का उद्देश्य विफलता का एक प्रमुख कारण है। राष्ट्रीय नमूना–सर्वेक्षण (2017–18) के अनुसार केवल 42% शहरी व 15% ग्रामीण परिवारों के पास इंटरनेट सुविधा मौजद थी, केवल 34% शहरी एवं 11% ग्रामीण व्यक्तियों के पिछले 30 दिनों में इंटरनेट का उपयोग किया था। उक्त आंकड़े इस बात की ओर स्पष्ट संकेत करते हैं कि दो तिहाई बालक ऑनलाईन शिक्षा प्रक्रिया के दायरे से बाहर हो जायेगें।

हाल ही में आई एकीकृत जिला शिक्षा सूचना प्रणाली की 2019–20 की रिपोर्ट में बताया गया है कि देश में केवल 22% स्कूलों में ही इंटरनेट सुविधा उपलब्ध है। ऐसे में सभी वंचित बच्चों को शिक्षा से जोड़ना आज तक चुनौती बन गई है।

(iii) किसी मानक नीति का न होना/डिजिटल शिक्षा हेतु मानक नीति का न बनाया जाना –

ऑनलाईन शिक्षा की दिशा में आ रही चुनौतियों का मूल कारण वर्तमान में हमारे पास डिजिटल शिक्षा, अवसंरचनात्मक ढांचे, अध्ययन सामग्री, सहभागिता और कई भाषाओं में उपलब्ध एक मानक नीति का अभाव है।

(iv) सामाजिक सामंजस्य एवं सामाजिक विकास अभाव –

सार्वजनिक शिक्षण संस्थान भी सामाजिक समावेश और सापेक्ष समानता में एक अनुकरणीय भूमिका का निर्वहन करते हैं। यह वह स्थान है जहां सभी वर्ग, जाति समुदाय, लिंग के लोग बिना किसी दबाव या विवशता के एक–दूसरे के साथ मिलकर शिक्षा ग्रहण करते हैं।

जहां बच्चों के भावनात्मक, सामाजिक और व्यवहार सम्बन्धित विकास की देखभाल की जाती है। यह जीवन की महत्वपूर्ण सीख हैं जो ऑनलाईन शिक्षा के द्वारा पूरी नहीं की जा सकती और न ही बच्चों में सामाजिक विकास की भावनाओं को जन्म दे सकती है। ऑनलाईन शिक्षा में शिक्षक और बच्चों में सामंजस्य स्थापित नहीं हो पाता जो पांरपरिक रूप से होता है पारम्परिक शिक्षा में विद्यार्थी को समझ न आने पर कक्षा में अध्ययन से उस विषय पर तर्क–वितर्क कर लेता है जबकि ऑनलाईन शिक्षा में इसका अभाव पाया जाता है। इसे दूर करना एक चुनौती भरा कार्य है। क्योंकि इसमें उस तरह का माहौल नहीं बन पाता जिस प्रकार का माहौल एक कक्षा–कक्ष में

होता है।

(v) योग्य शिक्षक तैयार करने हेतु प्रशिक्षण एवं तकनीकी जानकारी का अभाव –

ऑनलाईन शिक्षा हेतु सबसे बड़ी चुनौती यह है कि शिक्षकों को ऑनलाईन माध्यमों द्वारा शिक्षा देने के लिए पर्याप्त रूप से तकनीकी जानकारी एवं प्रशिक्षित नहीं किया जाना है।

(vi) अभिभावकों को तकनीकी साधनों की जानकारी का अभाव –

अधिकांश अभिभावक तकनीकी रूप से दक्ष नहीं होते और कई अभिभावकों के पास तकनीकी बुनियादी ज्ञान का भी अभाव होता है। ऐसे में यह बात महत्वपूर्ण हो जाती है कि उन्हें इस विषय में प्रारंभिक प्रशिक्षण/जानकारी उपलब्ध कराई जाए ताकि वे अपने बच्चों को भी जानकारी प्रदान कर सकें।

(vii) ग्रामीण क्षेत्रों में कम्प्यूटर, स्मार्टफोन व विद्युत उपलब्धता की समस्या –

ऑनलाईन शिक्षा माध्यम का जो एक और पक्ष भी सामने आया है जिसे नजर अंदाज नहीं किया जा सकता कि देश के स्कूलों में प्रौद्योगिक संचालित शिक्षा की स्थिति संतोषजनक नहीं है। देश के सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले अधिकांश बच्चे निम्न आय वर्ग के परिवारों से आते है। उनके पास न तो स्मार्टफोन की सुविधा होती है और न ही इंटरनेट पैक खरीदने की हैसियत और न ही कम्प्यूटर खरीदने की।

ऐसे परिवारों में गरीबी, जागरूकता और तकनीकी ज्ञान के अभाव में प्रौद्योगिकी संचालित शिक्षा की आवश्यकता को पर्याप्त महत्व नहीं दिया जाता है।

एकीकृत जिला शिक्षा सूचना प्रणाली की 2019–20 की रिपोर्ट में बताया गया कि देश के 15 लाख स्कूलों में से 38.54% स्कूलों में कम्प्यूटर उपलब्ध है। मध्यप्रदेश में 13.59%, मेघालय में 13.63%, पश्चिम बंगाल में 13.87%, बिहार में 14.19% तथा असम में 15% स्कूलों में ही कम्प्यूटर की सुविधा उपलब्ध है।

सरकारें भले ही देश में 100% विद्युतीकरण का सपना पूरा होने की बात कर अपनी पीठ थपथपा लें। लेकिन देश में विद्युतीकरण और विद्युत आपूर्ति की वास्तविक स्थिति किसी से छिपी नहीं है।

ग्रामीण विकास मंत्रालय द्वारा 2017–18 में करायागया एक सर्वे बताता है कि देश में 16% परिवारों को प्रतिदिन 1–8 घण्टे, 33% परिवारों को 9–12 घण्टे और सिर्फ 47% परिवारों को ही 12 घण्टे से अधिक बिजली मिलती है।

(viii) ई–शिक्षा बढ़ाने हेतु सरकारी प्रमुख प्रयास एवं चुनौतियां:–

ई–शिक्षा/ऑनलाईन शिक्षा को सभी के लिए उपलब्ध कराने के लक्ष्य को सफल बनाने के लिए सरकार अनेक प्रयास कर रही है। साथ–साथ चुनौतियां का सामना भी करना पड़ रहा है।

(ix) राष्ट्रीय डिजिटल लाइब्रेरी विकसित करना – यह एक एकल खिड़की खोज सुविधा के तहत सीखने के

संसाधनों के आभासी भण्डार का एक ढांचा विकसित करने की परियोजना है। इसके माध्यम से यहां 3 करोड़ से अधिक डिजिटल संसाधन उपलब्ध है। इसके माध्यम से अधिक से अधिक छात्रों का पंजीकरण करवाना सरकार के सामने एक चुनौतीपूर्ण कार्य है।

(x) ऑनलाईन पाठ्यक्रम प्रदान करना:- ऑनलाईन पाठ्यक्रमों का उपयोग न केवल छात्रों द्वारा बल्कि शिक्षकों और गैर छात्र-शिक्षार्थियों द्वारा भी जीवन में कभी भी सीखनें के रूप में किया जा सकता है। इसके लिए SWAYAM (Study Webs of Active Learning for Young Aspriring Minds) एक एकीकृत मंच उपलब्ध कराता है जो स्कूल (कक्षा 9-12) से लेकर स्नातकोत्तर स्तर तक ऑनलाईन पाठ्यक्रम प्रदान करता है। अब तक इस पर 2769 बड़े पैमाने के ऑनलाईन कोर्सेज MOOC (Massive Open Online Courses) द्वारा पेशकश की गई जिसमें लगभग 1.02 करोड़ छात्रों ने विभिन्न पाठ्यक्रमों में दाखिला लिया जो कि भारत जैसे विशाल देश में यह पर्याप्त नहीं है।

(C) SWAYAM PRABHA - Direct to Home के माध्यम से उच्च गुणवत्ता वाले 24×7 आधार पर शैक्षिक चैनल प्रदान करने की एक पहल है। इसका प्राथमिक उद्देश्य गुणवता वाले शिक्षण संसाधनों को दूरदराज के ऐसे क्षेत्रों तक पहुंचाना है जहां इंटरनेट की उपलब्धता अभी भी एक चुनौती बनी हुई है।

(D) वर्चुअल लैब्स की स्थापना करना:- महत्वकांक्षी परियोजना के उद्देश्यों को प्राप्त करने तथा वास्तविक दुनिया के वातावरण और समस्याओं से निपटने की क्षमता विकसित करने के लिए अत्याधुनिक कम्प्यूटर सिमुलेशन तकनीक के साथ आभासी प्रयोगशालाओं (Virtual Labs) को विकसित करना आवश्यक है। वर्चुअल क्लास रूम में लैब वर्क/प्रैक्टिकल करना मुश्किल होता है। इसे असली जामा पहनाने की चुनौतियां आज सरकारों के सामने है।

(E) कक्षा कक्ष शिक्षण एवं ऑनलाईन शिक्षण की प्रासंगिकता को बनाये रखने की चुनौती:- कक्षा कक्ष शिक्षण से शिक्षक-शिक्षार्थी के मध्य जो अन्त:क्रिया होती है उसके माध्यम से बालकों में सर्वांगीण विकास होता है जबकि ऑनलाईन शिक्षा में आभासी अन्त:क्रिया होती है। जो एक चुनौती पूर्ण कार्य है।

(F) डिजिटल सामग्री के भण्डारण एवं प्रबंधन की चुनौती:- एक डिजिटल भण्डार (Digital Repository) या डिजिटल लाइब्रेरी डिजिटल वस्तुओं के भण्डारण के लिए एक ऑनलाईन संग्रह है इसके द्वारा जो भी सामग्री इलेक्ट्रॉनिक प्रारूप में होती है उसे छोटी या लम्बी अवधि में संग्रहित करने के लिए जगह की आवश्यकता होती है। इस डिजिटल सामग्री के प्रबंधन और भण्डारण के लिए डिजिटल रिपोस्ट्री एक उपकरण की तरह से है। कोर्सवर्क, लर्निंग गेम्स और सिमुलेशन, ऑमेन्टेट, रियलिटी और वर्चुअल रियलिटी के निर्माण सहित कटेन्ट की एक डिजिटल रिपोजिट्री विकसित करना जिसमें प्रभावशीलता और गुणवत्ता के लिए यूजर द्वारा

रेटिंग करने के लिए एक स्पष्ट सार्वजनिक प्रणाली विकसित करना। छात्रों को ई–सामग्री का प्रसार करने के लिए एक विश्वसनीय बैकअप तंत्र प्रभाव तैयार किया जाना चाहिये जो एक चुनौतीपूर्ण कार्य है।

(G) ऑनलाईन शिक्षा के लिए पायलट अध्ययन की आवश्यकता – ऑनलाईन शिक्षा की हानियों को कम करने, उन्हें शिक्षा के साथ एकीकृत करने वाले लाभों का मूल्यांकन करने के लिए और छात्रों को उपकरणों की आदत, ई–केटैंन्ट का सबसे पसंदीदा प्रारूप जैसे संबंधित विषयों का अध्ययन करने के लिए NETF, CIET, NIOS, NTT, IIT आदि उपयुक्त एजेंसियों की पहचान की जायें और पायलट अध्ययनों के परिणामों को सार्वजनिक रूप से सूचित किया जाना चाहिये तथा निरन्तर सुधार के लिए इनका उपयोग किया जाना चाहिये जो कि एक चुनौतीपूर्ण कार्य है।

(H) शिक्षा के लिए नि:शुल्क और ओपन सोर्स सॉफ्टवेयर उपलब्ध कराना:– भारत जैसे विशाल देश में यह आसान काम नहीं है क्योंकि सरकार द्वारा पर्याप्त वित्तीय एवं तकनीकी सहायता प्राप्त नहीं हो पा रही। जिससे की सभी के लिए तकनीकी उपलब्धता मौजूदा समय में हो जाये।

(ix) ऑनलाईन शिक्षा से शारीरिक स्वास्थ्य पर पड़ने वाले नकारात्मक प्रभावों एवं तकनीकी के दुरूपयोग से निजात दिलाने की चुनौतियां:–

स्क्रीन पर अधिक समय बिताने के कारण शिक्षक और छात्रों की आंखों पर बुरा असर पड़ता है। बच्चों में मायोपिया रोग (निकटदृष्टि दोष) होने की संभावना अत्यधिक रहती है। उनकी त्वचा और बॉडीडल हो रही है जो कि शारीरिक तौर पर काफी नुकसान दायक है।

ऑनलाईन शिक्षा के माध्यम से हम बालकों की मनोदशा, अनेक भावों, उनकी एकाग्रता और अध्ययन में रूचि का सही तरह से अवलोकन और आकलन नहीं कर पाते क्योंकि इंटरनेट युक्त डिजाइन (कम्प्यूटर/मोबाईल) उपलब्ध होने के कारण युवावस्था में तकनीकी के दुरूपयोग से उनके भटकने की आशंकाएं बनी रहती है। छात्र बिना किसी शिक्षक और सहपाठियों के अकेला महसूस कर सकते है। परिणाम स्वरूप वे अवसाद से पीडित हो सकते है। इन सभी प्रमुख बातों पर ध्यान देना और उनसे निजात दिलाने की चुनौती हमारे सामने है।

(x) बिना आत्म अनुशासन या अच्छे संगठनात्मक कौशल के अभाव में विद्यार्थी ई–शिक्षा मोड में की जाने वाली पढ़ाई में पिछड़ सकते हैं। बच्चे पढ़ाई में नहीं पिछड़े और सभी को समान्तान्तर रूप से शिक्षा प्रदान कराई जाये, यह एक चुनौती पूर्ण कार्य है।

(xi) ऑनलाईन मूल्यांकन और परीक्षाएं सम्पन्न कराने की सबसे बड़ी चुनौती:– 21वीं सदी के कौशल पर ध्यान केन्द्रित करते हुए शिक्षा प्रौद्योगिकियों का उपयोग कर मूल्यांकन के नये तरीकों का अध्ययन उपयुक्त

निकायों (प्रस्तावित राष्ट्रीय मूल्यांकन केन्द्र, स्कूल बोर्ड, एनटीटी आदि) के द्वारा मूल्यांकन रूपरेखाओं जिसमें दक्षताओं, पोर्टफोलियो, मानवीकृत मूल्यांकन और मूल्यांकन विश्लेषण के डिजाइनों को शामिल कर उनका निर्धारण करना कोई आसान कार्य नहीं है।

(xii) डिजिटल इन्फ्रास्ट्रक्चर तैयार करना जिससे की डिजिटल अन्तर कम हो सके:- देश की जनसंख्या का एक हिस्सा ऐसा है जिसकी डिजिटल पहुंच अत्यधिक सीमित है। मौजूदा जनसंचार माध्यमों जैसे रेडियो, टीवी और सामुदायिक रेडियों का उपयोग, टेलीकॉस्ट और प्रसारण के लिए बड़े पैमाने पर किया जाने की एक जटिल समस्या है इसके लिए डिजिटल इन्फ्रास्ट्रचर के निर्माण करने की अत्यधिक आवश्यकता है। जिसका उपयोग कई प्लेटफार्म और पांईट सौल्यूशन द्वारा किया जा सकता है।

(xiii) इन्टरनेट एवं मोबाइल/कम्प्यूटर की लत से निजात दिलवाने की चुनौती:-

आज देश में 48 फीसदी किशोर इन्टरनेट की लत से ग्रसित है अर्थात हर तीसरा व्यक्ति, इसका शिकार है। इन्टरनेट का नशा इस कदर किशारों के सिर पर चढ़ रहा है कि उनका ईलाज और काउसंलिंग तक करनी पड़ रही है।

देशभर में बाल संरक्षण पर काम करने वाली NGO ''क्राई'' के सर्वे में यह बात सामने आई कि दिल्ली-NCR में 93% किशोरों के पास इन्टरनेट सुविधा उपलब्ध है, जिसमें से 41% किशोर फेसबुक और यूट्युब चलाते है और केवल 40% छात्र इन्टरनेट का उपयोग पढ़ाई के लिए करते हैं।

किशोर छात्रों को मोबाइल, इन्टरनेट और सोशल मीडिया की लत लगने से उनमें मौखिक संवाद घटा है। मोबाइल का लगातार इस्तेमाल करना इस बात पर उनका खुद का नियन्त्रण नहीं रहता, जिसके कारण उनके दैनिक जीवन के कामकाजों पर गहरा प्रभाव पड़ रहा है। हर 5-10 मिनिट बाद स्क्रीन देखने की चाहत, अपनी पोस्ट पर कमेंट, लाइक देखने के लिए बार-बार मोबाइल को देखना, हर रोज 10-12 घण्टे इन्टरनेट और मोबाइल/कम्प्यूटर का उपयोग करना इसके प्रमुख लक्षण है। इसकी लत लगने के बहुत से कारण हैं जिनमें इन्टरनेट का इस्तेमाल, मोबाइल एप्स एवं सोशल मीडिया का उपयोग, वर्चुअल दुनिया से जुड़ना, मोबाइल गेम्स तथा मोबाइल से पैसे कमाना प्रमुख है।

राष्ट्रीय मानसिक आरोग्य व स्नायु विज्ञान संस्थान (निम्हांस) ने डिजिटल लत छुड़ाने की क्लिनिक ''शट (SHUT)** Service for Healthy use of technology चला रहे हैं।

इस लत को छुड़ाने के लिए उत्तर प्रदेश सरकार जिला मुख्यालयों पर ''मन कक्ष'' बनाये जाने के निर्देश जारी किये हैं। मन कक्ष में मानसिक रोगियों को मनोचिकित्सक की देखरेख में रखा जाता है।

यह कार्य जो NGO और सरकारी संस्थान कर रही हैं भारत जैसे देश में किसी चुनौती से कम नहीं है। एक

प्रकार से यह कार्य ऊँट के मुंह में जीरा के समान है।

(xiv) शिक्षा गुणवत्ता एवं शुल्क की चुनौती:-

शिक्षा सभी का अधिकार के तहत सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थाओं की बराबर की भागीदारी होती है। सरकारी संस्थाओं में न्यूनतम शुल्क लेकर कुशल एवं उच्च योग्यताधारी शिक्षकों द्वारा गुणवत्ता युक्त शिक्षण कार्य कराया जाता है। जबकि गैर सरकारी संस्थाओं में यह एक चुनौतिपूर्ण विषय है कि वे सरकार द्वारा तय शुल्क में ही अपना शिक्षण कार्य योग्य शिक्षकों द्वारा गुणवत्तापूर्ण करवा पायेंगे।

निष्कर्ष :- इस बात को महत्वपूर्ण स्थान देना जरूरी है कि शिक्षा किसी भी रूप में हो परन्तु शिक्षार्थी की शिक्षा बाधित नहीं होनी चाहिए। कोरोना काल ने सही मायने में भारत को डिजिटल इंडिया बना दिया है। ऑनलाईन शिक्षा आज शिक्षा प्राप्त और प्रदान करने का सबसे बड़ा साधन है।

यह कहा जा रहा है कि ऑनलाईन कक्षाऐं वास्तविक कक्षाओं का विकल्प नहीं हो सकती क्योंकि एक शिक्षक की उपस्थिति में कुछ सीखा जाये दूसरा उसकी वर्चुअल उपस्थिति में कुछ सीखा जाये दोनों को अलग-अलग परिस्थितियां है।

आज ऑनलाईन शिक्षा एक वास्तविकता है जिसे हम मानें या न मानें स्वीकार करना पड़ेगा। कोरोना के संकट ने हमारी पूरी शिक्षा व्यवस्था के सामने कई सवाल खड़े किये है। जिसमें क्लासरूम टीचिंग की प्रासंगिकता, उसकी रोचकता और जरूरत बनाए रखना एक बड़ी चुनौती है।

ऑनलाईन शिक्षा से विद्यार्थी एकाकी रूप से हर तथ्यों का सुक्ष्मरूप से अध्ययन कर सकता है तथा उसे किसी भी समय इच्छानुसार दोहरा भी सकता है। ऑनलाईन शिक्षण से केवल विभिन्न विषयों का ज्ञान मिलता है किन्तु विद्यालयों में मिलने वाली नैतिक शिक्षा का इस व्यवस्था में सर्वथा अभाव है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में मात्र विद्यार्थी को व्यस्त रखने के लिए इस पद्धति का उपयोग हो रहा है।

अत: इसमें सन्देह नहीं है कि नई सूचना तकनीक एवं ऑनलाईन तथा ई-लर्निंग शिक्षा व्यवस्था हेतु एक वरदान की तरह है, वहीं दूसरी तरफ परम्परागत ऑफलाईन शिक्षा का अपना महत्व है।

इसलिए शिक्षा व्यवस्था को न तो पूरी तरह ऑनलाईन शिक्षा पर केन्द्रित किया जा सकता है और न ही केवल पारम्परिक शिक्षा के सहारे रखा जा सकता है। बल्कि बेहतर परिणाम ऑनलाईन शिक्षा तथा पारम्परिक शिक्षा दोनों के सम्मिश्रण से ही प्राप्त किये जा सकते हैं।

सन्दर्भ सूची:-

1. सक्सैना, पराग (2017) – ''नई शिक्षा पद्धति'', अग्रवाल पब्लिकेशन, नई दिल्ली
2. डंगवाल, डॉ. किरणलता, वर्मा डॉ. सुमन (2016), ''सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी'', राखी प्रकाशन प्रा.लि. आगरा
3. डॉ. हर्ष कुमार, गोदारा डॉ. के.एल. (2016) – ''ICT की समीक्षात्मक समझ'', राखी प्रकाशन प्रा.लि. आगरा
4. www.indianexpress.com > "Digital India" is not prepared for Digital Education, By Sam Pitroda (3 Sep. 2020)
5. www.drishtiias.com > इलेक्ट्रॉनिक शिक्षा: विशेषताएं और चुनौतियां, 30 अप्रैल 2020
6. www.hindisahityatest.com> ऑनलाईन शिक्षा की चुनौतियां
7. www.hindividyaog.com > ऑनलाईन शिक्षा का महत्व
8. www.patrika.com > आपकी बात, वर्तमान में कितनी उपयोगी है ऑनलाईन शिक्षा? 11 नवम्बर, 2020
9. www.jansatta. com > ऑनलाईन शिक्षा की चुनौतियां, 4 अगस्त 2021
10. www.leverageedu.com > एक सुनहरे कल की शुरूआत, 17 जून 2021
11. www.bhaskar.com > नई पीढ़ी हो रही मनोवैज्ञानिक परेशानियों का शिकार, 02 नवम्बर 2021
12. www.patrika.com > मोबाइल या इन्टरनेट की लत है तो यह कीजिऐ, By - संतोष पाडें, 3 Aug. 2019
13. www.livehindustan.com > लोगों में मोबाइल की लत छुड़ाने को अब सरकार ने बनाया सूपर प्लान, By - गौरव शर्मा, 20 July 2019
14. www.amarujala.com > 48% किशोर इन्टरनेट की लत के ग्रसित, जीवन पर पड़ रहा है, नकारात्मक असर
    By - अभिषेक पांचाल, संजीव कुमार झा, 19 Feb. 2020